Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-4, Continuous Issue-10, November - December 2021

संस्कृत भाषा मे रचित राम कथा

वाल्मीकि रामायण के आधार पर राम-कथा :---

'वाल्मीकि रामायण' के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि माना जाता है और इसीलिए यह महाकाव्य 'आदिकाव्य' कहा जाता हैं ।

वाल्मीकि' रामायण' मे राम को विष्णु का अवतार माना गया हैं । भगवान विष्णु ही राजा दशरथ के घर मनुष्य-रुप धारण कर अवतरित हुए थे । वाल्मीकि रामायण में राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ के समय देवतागण यज्ञ में भाग लेने के लिए उपस्थित होते हैं और वे भगवान विष्णु से लोक कल्याण हेतु रावण वध के लिए प्रार्थना करते है :

" त्वां नियोक्ष्यामहे विष्णों लोकानां हितकाम्या ।
तत्र त्वं मानुषो भूत्वा प्रवृद्वं लोककण्टम् ।
अवध्यं देवतैविष्णो समरे जहि रावणम् ।।"

अर्थात् हे प्रभु विष्णु ! लोकहित की कामना से हम आपको इस काम में लगाना चाहते हैं । आप मनुष्य - रुप में अवतार लेकर बढे हुए लोककंटक रुप और देवताओं से न मारे जा सकने वाले रावण का युध्द में संहार कीजिए । इसिलिए गुरु विश्वामित्र ने भी ताडका, मारिच, सुबाहुं आदि राक्षसों के संहार के लिए राम को ही चुना। इसीलिए गुरु विश्वामित्र तथा महर्षिओंने विभिन्न दिव्यास्त्र दिए । महर्षि नारद ने भी महर्षि वाल्मीकि के आगे राम नाम की महिमा गायी और वाल्मीकि जब राम - नाम मंत्र से जो अनुभूति हुई ,वहीं बात जनकल्याण के लिए ब्रह्मा के कहने पर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण मे लिखा ।

'वाल्मीकि रामायण 'में 'राम' पितृभक्त, भ्रातुप्रेम, पत्नीव्रत धर्म, आज्ञापालन करनेवाला आदर्श पुत्र,जीवों का उध्धार करनेवाला, आदर्श राजा,परमात्मा का रुप,राक्षसों का संहारक, सर्व-व्यापि राम,गुरु की आज्ञा का पालनकर्ता, गुरु से दिव्यास्त्र पानेवाला, मर्यादापुरुषोत्तम राम, अयोध्या के सूर्यवंशी/ रघुवंशी राजा दशरथ और कौशल्या का जयेष्ठ पुत्र है ।

सर्व- व्यापी राम :----

'राम' शब्द का अर्थ है,सकल व्रह्मांड मे निहित या रमा हुआ तत्व यानी चराचर में विराजमान स्वयं ब्रह्म । जबकि संत तुलसीदास का 'राम'शब्द से अभिप्राय उस परमात्मा से है जो समस्त जड-चेतन विश्व में रमा हुआ या सर्व-व्यापी है । वे हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि आदि पुरुष या परम प्रभु राम ही विश्व में व्याप्त हैं । वे कहते हैं :

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना । परमानंद परेस पुराना ।
यह कछु नहीं प्रभु कई अधिकाई । बिस्वरुप व्यापक रघुराई ।

यह समस्त विश्व जिसमें राम या परमात्मा समाया हुआ है,राम का ही रुप हैं I इसलिए तुलसी राम को 'व्यापक'(जो
समाया हुआ हैं) और 'व्याप्य' (जिसमें व समाया हुआ हैं)
--दोंनो ही कहते हैं I जो सभी गुणों का भंडार है,जो अलख, अविनाशी, आनंदमय और निर्गुण राम का कभी नाश नहीं होता I निर्गुणधारा के संतों की वाणी में भी इस शब्द का विस्तृत प्रयोग हुआ है I नामदेव,कबीर,रविदास, गुरु नानक
आदि पूर्ण सन्तों की वाणी में सैकडों बार 'राम' शब्द प्रयुक्त हुआ है I इस तरह स्वाभाविक ही मनमें जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि 'राम' शब्द का वास्तविक संकेत किस ओर हैं और राम का वास्तविक स्वरूप क्या है ? मीरा के भजनों में'राम ' शब्द का प्रयोग किया है ,तो गुजराती कवि नरसिंह महेता के पदों मे भी राम नाम की महिमा है। तो संत कबीरने 'राम' शब्द के विभिन्न प्रचलित अर्थो को इसप्रकार स्पष्ट किया है :

जग में चारों राम हैं,तीन राम व्योहार I
चौथा राम निज सार है,ताका करो विचार ।।
एक राम दशरथ घर डौलै,कौन राम घट -घट में बोलै I
एक राम का सकल पसारा, एक राम तिरगुनते न्यारा ।।"

आप समझाते हैं कि लोग राम शब्द का प्रयोग प्रायः
अलग -अलग अर्थो में करते हैं I कुछ लोग राम शब्द को
अयोध्या नरेश दशरथ का सुपुत्र समझते हैं I कुछ लोग घट-घट में बैठे मन को राम कहते हैं I कुछ लोग समस्त सृष्टि के प्रसार को चलाने वाले ब्रह्म को राम कहते है,किन्तु सन्तों का राम से अभिप्राय निर्गुण, निराकार प्रभु से हैं I लेकिन निर्गुण,
निराकार प्रभु को प्राप्त करने के लिए एक ही मंत्र है --'राम'
नाम का स्मरण I कई जन्मों के अच्छे कर्मों से मिला यह मनुष्य जन्म सार्थक करना है ,जीते भी परमात्मा की प्राप्ति करनी है ,तो एक ही उपाय है --राम नाम का स्मरण ,राम की भक्ति I तभी तो वालिया लुटेरा भी (रत्नाकर) 'राम'नाम के सुमिरन से महर्षि वाल्मीकि बने ओर नाम सुमिरन से जो अनुभूति हुई वही 'रामायण ' ग्रन्थ में आपने वर्णन किया I
मर्यादा पुरुषोत्तम राम :---श्रीराम की प्रतिष्ठा मर्यादा पुरुषोत्तम
के रुप में हैं I श्रीराम ने मर्यादा के पालन के लिए राज्य, मित्र,माता - पिता,यहां तक की पत्नी का भी साथ छोडा ।इनका परिवार आदर्श भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता हैं I राम रधुकुल में जन्मे थे,जिसकी परम्परा 'रघुकुल
रीति सदा चलि आई प्राण जाई पर वचन न जाई' की थी I

राम के पिता दशरथ ने उनकी तीसरी पत्नी कैकेयी को कोई भी दो इच्छाओं को पूरा करने का वचन दिया था । तो कैकेयी ने दासी मंथरा के बहकावे मेंआकर राजा दशरथ से वरदान के रुपमें --अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजसिंहासन और रामको चौदह वर्ष का वनवास

मांगा ।रामने पिता की आज्ञा का पालन किया और अपनी पत्नी संग वनवास जाने के लिए तैयार हो गये । और लक्ष्मण भी भाई की सेवा करने के लिए उनके संग ही गये । लेकिन जब भरतने यह बात जानी तो,माता का आदेश न मानकर रामको बुलाने के लिए गये ओर जब राम ने इन्कार किया तो राम की चरणपादुका ले आया और उसे उँचे आसन पर रखकर राजकाज किया । और राम का वनवास पूरा होनेपर भरतने
राज्य भाई राम को सौंपा । राम न्यायप्रिय थे । उन्होंने बहुत अच्छा शासन किया,इसलिए लोग आज भी अच्छे शासनकों रामराज्य की उपमा देते हैं ।

आदर्श भाई :---हिन्दू संस्कृति के अनुसार भाईयों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। इसकी शिक्षा हमें महर्षि वाल्मीकि ने राम के भातृस्नेह से अभिव्यक्त किया हैं । राम तो अपने सभी भाईयों से प्रेम करता है,लेकिन लक्षण के प्रति
उनका सविशेष प्रेम हैं ।परंतु भरत के प्रति भी राम का प्रेम कम नहीं हैं । भरत के बारे में राम सुग्रीव से कहता है --

"न सर्वे भ्रातरस्तात भवन्ति भरतोपसा: ।"

राम को अपने सभी भाई अपने प्राणो से प्रिय है । तभी तो लक्ष्मण जब मुर्छित हो जाता हैं ,तो राम सामान्य पुरुप की
तरह विलाप करते हैं । नंदीग्राम में राम और भरत का मिलन अत्यंत ह्रदय स्पर्शी है । उस समय आकाश मे विचरण करनेवाले देव,गंधर्व, सिध्दों और महर्षिओंने रामचंद्रजी की स्तुति करते है:

"श्री रामचंद्र कृपालु भजमन,हरण भव भय दारुणं
नवकंज लोचन कंजमुख, करकंज पदकंजारुणम् ।
कंदर्प अगणित अमित छबि,नवनील नीरद सुंदरम्
पटपीत मानहु तडित रुचिशुचि,नौमि जनकसुतावरम् ।।"

राम की मातृभक्ति :---वाल्मीकि रामायण में राम की मातृभक्ति बेजोड हैं । महर्षि वाल्मीकि ने राम का अपनी मां कौसल्या के प्रति विशिष्ट भक्तिभाव व्यक्त किया हैं । राम अपने राज्याभिषेक की सूचना सर्वप्रथम अपनी मां कौशल्या
को ही देते हैं तथा राज्याभिषेक के स्थगित हो जाने का समाचार भी सबसे पहले मां को ही देते हैं । माता कोशल्या
के दुःखी होकर उसके साथ आने की बात करती हैं,तब राम
मां से कहते हैं :--

" व्रतोपवासनिरता वा नारी परमोत्तमा ।
भर्तार नानुवर्तेत सा च पापगतिर्भवेत् ।।"

अर्थात् व्रत और उपवास करके नियममें रहनेवाली उत्तम स्त्री भी अगर पति के अनुकूल नहीं रहती ,तो उनकी गिनती पापियों में होती हैं । इसप्रकार मां को अपने कर्तव्य पालन,

अपने धर्म का पालन करने की बात कहता हैं । वनवास काल में भी माता कौशल्या के लिए चिन्तित रहते हैं ।

राम की मातृभक्ति केवल अपनी मां कौशल्या तक ही सीमित नहीं है बलकि अपनी अपनी विमाताओं के प्रति भी अत्यधिक विनम्र हैं । माता कैकेयी की जिद्द के कारण राजा दशरथ की मृत्यु हुई और भरत ने ऐसे कार्य के लिए अपनी मां को माफ नहीं किया और न हीं राज्य स्विकार किया बलकि मां को अपना कर्तव्य याद दिलाया ।अत:मां कौशल्या राम से माफी मांगती हैं । लेकिन राम तो राम हैं ,बडे -बडे पापीयों का उध्धार किया है ,तो यह तो उसकी मां हैं । मां
कैकेयी के लिए किसी भी प्रकार की कडवाहट उसके मुख पर नहीं आती है क्योंकि राम अपनी मां का आदर करते हैं ।

राक्षसों का संहारक / वीर योध्दा :---

प्रभु राम ने सबसे पहले ताडका का संहार किया,
जिससे देवता प्रसन्न हुए ओर कहा -प्रजापति कुशाश्व के जो अस्त्रशस्त्र आपको प्राप्त हुए है ,वह रामचंद्र को देना ,क्योंकि
देवताओं का बहुत बडा कार्य राम ने किया है ।ताडका के वध से पूरा वन निर्भय हुआ । छठ्ठे दिन मानवास्त्र से मारिच और आग्नेयास्त्र से सुबाहु का वध किया और निर्विघ्न यज्ञ पूर्ण हुआ ।जिससे ऋषि मुनियों ने रामको आर्शिवाद दिए ।गुरु विश्वामित्र प्रसन्न हूए ओर कहा कि आज सिध्धाश्रम का नाम सार्थक सिध्ध हुआ क्योंकि सिध्धाश्रम मे विष्णु भगवान ने तप करके वामन स्वरुप धारण किया ओर उसी विष्णु के अवतार रामने सिध्धाश्रम मे आकर मुनियों और यज्ञ की रक्षा
की । परमात्मा विष्णु ने देव कार्य के लिए ही मनुष्य अवतार मे प्रभु रामचन्द्र ने जन्म लिया ।

इतना ही नहीं युवावस्था में अकेले ही खर-दूषण, त्रिशिरा आदि चोदह-हजार राक्षसों का संहार किया क्योंकि प्रभु राम का जन्म राक्षसों के संहार के लिए ही हुआ था । गीता मे लिखा हैं ---

" यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्थ तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।"

बात एकदम स्पष्ट है --जब -जब अधर्म की प्रधानता तथा धर्म का लोप होने लगता है,तब -तब वे अवतार लेकर भक्तों का उध्दार करने,दुष्टों का विनाश करने तथा धर्म की फिर से स्थापना करने के लिए हर युग में धरती पर जनकल्याण के लिए जन्म लेते है । त्रेतायुग मे परमात्मा का रुप विष्णु के अवतार राम ने ऐसे राक्षसों के संहार के लिए जन्म लिया । विराध वध तथा कबन्ध वध उनके उत्कृष्ट पराक्रम का उदाहरण हैं । लंकापति रावण और कुम्भकर्ण का वध करके अद्वितीय पराक्रमी होने का प्रमाणदिया है ।

गुरु से दिव्यास्त्र पानेवाला :. रामायण मे राम का अनेक ऋषि मुनियों से मिलना हुआ और हरेक ऋषि मुनिने राम को आध्यात्मिक ज्ञान और अस्त्रशस्त्र दिये । राम ने गुरु वशिष्ठ से शिक्षादीक्षा ग्रहण की ओर आपसे आध्यात्मिक ज्ञान भी अर्जित कीया । और गुरु विश्वामित्र राम के पराक्रम से परिचित थे ,इसलिए ताडका, मारिच, सुबाहु जैसे राक्षसों के संहार के लिए राजा दशरथ से मांगते है । लेकिन राम पिता और गुरु की आज्ञा लेकर गुरु विश्वामित्र के साथ चलने के लिए तैयार हो जाता है । तब गुरु विश्वामित्र सबसे पहले राम और लक्ष्मण को बला तथा अतिबला नामक दो विध्या देते है
ताकी राम ओर पराक्रमी, कुशल,ज्ञानी,बुध्दिमान, तर्क और
सद्भाग्य में उत्तम पद प्राप्त करे । इस विध्यासे भूख-प्यास नहीं लगती,कभी थकान नहीं लगती ।यह विध्या गुरु विश्वामित्र ने तपस्या करके ब्रह्मदेव से पाया था ,जो अब गुरु विश्वामित्र राम को देते है ।

इतना ही नहीं दंडचक्र,धर्मचक्र,कालचक्र,विष्णु चक्र,इन्द्र का वज्रास्त्र,महादेवका शूलवतास्त्र,ब्रह्मा का ब्रह्मशर,मोदकी और शिखरी नामक गदाएँ ,सूर्य का तेज -प्रभ अस्त्र,सोम का शिशिर नामक अस्त्र, मनु का शीतेषु नामक अस्त्र भी गुरु विश्वामित्र राम देते है ।इतना ही नही उसका संधान (चलाना) करने की विधि भी सिखाते है ।इसप्रकार विभिन्न देवो से प्राप्त दिव्य अस्त्र रामचंद्र को दिये ।

यज्ञ पूरा होने के बाद गुरु विश्वामित्र दोनों भाईयों को
मिथिलापुरी ले गये ,वहां पर राम धनुष भंग करते है, धनुष की टंकार सुनकर गुरु परशुराम भी वहां पहुंच जाते है ।लेकिन जब प्रभु राम के वास्तविक स्वरूप को जाना, तो माफी मांगी और अपना वैष्णव धनुष राम को देकर महेन्द्र पर्वत पर चले जाते हैं ।

वन -यात्रा के दौरान भरद्वाज ऋषि से मुलाकात होती है,ऋषि अत्रि के आश्रम पर कुछ समय निवास करके विभिन्न आर्शीवाद पाते है और माता सीता को सती अनसूया से दिव्य गहने प्राप्त होते है । राम जब दण्डकारण्य में प्रवेश करने पर वहां के आश्रम में रहनेवाले ऋषिगण राम का स्वागत करते हैं यही पर राम विराध नामक राक्षस का वध करते हैं ।इसके अनन्तर राम शरभंग,सुतीक्ष्ण तथा अगस्त्य आदि महर्षियों के आश्रम मे जाते हैं । अगस्त्य ऋषि
राम को विष्णु-धनुष प्रदान करते हैं । पंचवटी निवासस्थान पर शुर्पणखा का अपमान होने पर राक्षस सेनापति खर चौदह हजार राक्षसों सहित राम से युध्द करते है । और राम दूषण,त्रिशिरा एवं खर सहित समस्त राक्षस सेना का संहार करते है । इसप्रकार देवो द्वारा दिए गये दिव्य अस्त्रशस्त्र का प्रयोग राक्षसों के संहार के लिए उपयोग करता हैं ।

जीवों का उध्दारक :

प्रभु श्रीराम जीवों का उध्धार करनेवाले परमात्मा का रुप है । आपने गौतममुनि से श्रापित अहल्या का उध्धार किया तो,गौतममुनि द्वारा श्रापित इन्द्र को भी श्राप मुक्त किया । राम भक्त शबरी को भी दर्शन देकर मुक्ति दिलाई । ।तो जटायु ओर तारा का भी उध्धार किया ।

इसप्रकार आदिकवि वाल्मीकि ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के संबंध में लिखा हैं कि गंभीरता में उदधि के समान और धैर्य में हिमालय के समान हैं । राम के चरित्र में पग -पग पर मर्यादा त्याग, प्रेम और लोकव्यवहार के दर्शन होते हैं । रामने साक्षात् परमात्मा होकर भी मानव जाति को मानवता का संदेश दिया ।उनका चरित्र उत्तम हैं ।
इसलिए तो भगवान राम के चरित्र का गहरा प्रभाव हैं और
युगों -युगों तक रहेगा ।

संदर्भ सूचि :---
1-आदिकवि श्रीवाल्मीकी रचित श्री वाल्मीकि रामायण-
-श्री नरेन्द्र कुमार(गुजराती अनुवाद) -पृष्ठ -25,29
2- " " - पृष्ठ-160
3- " -पृष्ठ -871
4-रामचरित मानस तथा उत्तररामचरित का तुलनात्मक विवेचन - डा.श्रद्धा शुक्ल --पृष्ठ: 3,32,33,70,73
5-रामचरितमानस का संदेश -एस.एम.प्रसाद-पृष्ठ:97,98